इकाई 6 नगरीय समाजशास्त्र नेटवर्क: दृष्टिकोण*

संरचना

6.0 उद्देश्य

6.1 परिचय

6.2 नगरीय समाजशास्त्र में नेटवर्क की अवधारणा

6.2.1 शक्ति एवं सशक्तिकरण

6.2.2 सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ

6.3 नेटवर्क–समाज

6.3.1 वैश्वीकरण तथा नेटवर्क

6.3.2 समाजशास्त्र और नगरीय नेटवर्क

6.4 सारांश

6.5 संदर्भ

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप पढ़ेगे–

- नगरीय समाजशास्त्र में नेटवर्क की अवधारणा की व्याख्या,
- सूचना एवं प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति का परीक्षण, और
- वैश्विक नगर के साथ नेटवर्क पर चर्चा।

6.1 प्रस्तावना

'राजनैतिक अर्थव्यवस्था' पिछली इकाई में आपने जाना कि देश की राजनीति तथा आर्थिक संस्थान व उनकी गतिविधियां समाज पर किस प्रकार प्रभाव डालती हैं। इस इकाई में हम सूचना एवं प्रसारण तकनीक से संबंधों का खुलासा करेंगे। समाज का विचार जब नेटवर्क में समाहित हो जाता है तो उसे 'नेटवर्क–समाज की संज्ञा दी जाती है। इसका संबंध वैश्विक परिदृश्य के समाज के साथ जुड़ जाने से तथा इस इलैक्ट्रोनिक व आधुनिक प्रौद्योगिकी से जुड़े जाने से है जो समाज में सम्पर्क के नये रास्ते तैयार करती है। मेनुअल केस्टेल ने अपने महत्वपूर्ण शोध में नेटवर्क समाज की व्याख्या की है तथा सैद्धांतीकरण भी किया है। उसके अनुसार – नेटवर्क सामज वह समाज है, जिसका सामाजिक ढांचा माइक्रो–इलैक्ट्रानिक्स आधारित सूचना एवं संचार तकनीकों द्वारा संचालित नेटवर्क से निर्मित होता है (केस्टेल्स 3: 2004)।

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि ये नये सामाजिक ढांचे खालीपन में नहीं बने हैं। ये पूरी 20वीं शताब्दी में अस्तित्व में आई गतिविधियों व प्रक्रियाओं के परिणाम हैं। इन नई सामाजिक संरचनाओं के अस्तित्व में आने के कारण इस प्रकार है:–

* डॉ. एकता जैन सेठी, शोधकर्ता, दक्षिण एशियायी विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

क) औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्गठन – जिनके अंतर्गत नये बाजारों की अवधारणाओं का जन्म हुआ। इसके परिणाम स्वरूप बाजारों के विकास के आदर्श रास्ते तैयार हुए और साथ–साथ राष्ट्रीय राज्य का विचार धीरे–धीरे कमजोर हुआ। देशों के अंदर तथा देशों की सीमाओं के बाहर भी सामाजिक समावेशिता तथा अपवर्जन की प्रवृत्ति गहरी होती गई।

ख) 1960 के दशक के उत्तरार्ध तथा 1970 के दशक के प्रर्वार्ध में स्वाधीनता तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों पर केंद्रित अनेक आंदोलनों का जन्म हुआ, जैसे – नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन, पर्यावरण सुरक्षा के लिए आंदोलन अथवा नारीवादी आंदोलन – इन सबके कारण एक बेहतर नेटवर्क का निर्माण हुआ। आंदोलनों को इतिहास में सदैव महत्व रहा है। ये ऐसे हालत पैदा कर देते हैं जो मानव क्षमताओं व संभावनाओं के मानदंडों पर विशेष जोर देते हुए मनुष्य समाज को अधिक सक्षम बन जाने और अधिक अधिकार पा जाने की अनुकूलता उत्पन्न कर देते हैं। स्वाधीनता आंदोलन पर जोर दिये जाने से सम्पर्क तथा आधुनिक नेटवर्क संरचनाओं को अधिक व्यापक प्रणालियां उपलब्ध हो गईं जिससे मानव विकास को बढ़ावा मिला।

ग) इसके कारण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में धीरे–धीरे क्रांति आ गई और तेजी से नेटवर्क समाज के विकसित होने की संभावनाएं उत्पन्न हो गईं।

केस्टेल्स के अनुसार – ''स्वाधीनता की संस्कृति ने नेटवर्क प्रौद्योगिकी के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई। जिसने बदले में व्यापार व उद्यमों के लिए ऐसी संरचनाएं उत्पन्न कीं जिसके बल पर व्यापार वृद्धि व उद्यमों को वैश्विक स्तर पर विस्तार होता चला गया (2004: 22)।

6.2 नगरीय समाजशास्त्र में नेटवर्क की अवधारणा

21वीं शताब्दी तक आते–आते एक अलग तरह का महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिला। इससे सामान्यता का युग आरंभ हो गया। जीवन के प्रत्येक पहलू में ऐसे–ऐस बहु–आयामी परिवर्तन हुए जिन्हें समझना मुश्किल हो गया। इस दौर में समाजशास्त्र की जरूरत किसी भी अन्य दौर की तुलना में बहुत ज्यादा महसूस हुई। यद्यपि यह समाजशास्त्र थोड़ा अलग प्रकार का है जिसकी शाब्दिक व्याख्या संभव नहीं लगती। सच तो यह है कि इसके सही स्वरूप को समझने के लिए समाज का अध्ययन किया जाना अपेक्षित है। यह समाजशास्त्र अपने औपचारिक परिचय के लिए बाध्य नहीं है। संक्षेप में, इस नये तरह के समाजशास्त्र के लिए एक तरह की सहमति विकसित हो ऐसा महसूस किया जा रहा है। यह समाजशास्त्र प्रेक्षण पर आधारित है। इसके लिए संपर्क साधना और सिद्धांतों का निर्माण करना अपेक्षित है। पिछले दौर में तेजी से सामाजिक परिवर्तन हुए है, विभिन्न प्रकार की सामाजिक प्रक्रियाओं तेजी से अस्तित्व में आई हैं। समाजशास्त्रियों के लिए, यह जरूरी है कि वे सूचना युग की प्रौद्योगिकियों तथा रचना धर्मिता के मूल्यों में समावेशीकरण के कारण आने वाले परिवर्तनों को समझें और उनकी व्यापक समीक्षा करें। नगरीय समाजशास्त्र के नेटवर्क परिप्रेक्ष्य से जुड़ी कुछ अवधारणाओं का विवरण नीचे दिया जा रहा है:

6.2.1 शक्ति तथा सशक्तीकरण

किसी समाज के पर्याप्त रूप से नेटवर्क से जुड़े होने अथवा जुड़े न होने की सामाजिक तथा संपर्क प्रणाली एक ऐसा अभिन्न शक्ति द्वारा संचालित होती है, जो सामाजिक परिवर्तनों को निर्धारित करती है। 'शक्ति' शब्द से अभिप्राय उस क्षमता से

है, जिसके माध्यम से हम अपनी इच्छाओं से दूसरों को प्रभावित करते हैं। संपर्क पर नियंत्रण करने तथा उस पर प्रभाव डालना नेटवर्क समाज की शक्ति का प्रमुख रूप है। यह भी सच है कि समाज में अपने विचारों, मान्यताओं तथा लक्ष्यों को दूसरों के रूप तक पहचान के लिए नेटवर्क का संपर्कत्व तथा नेटवर्क तक पहुंच, मानव समूहों के लिए मजबूत आधार बन जाती है। इस प्रकार से शक्ति के इस्तेमाल करने के माध्यम बन जाते हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि नेटवर्क समाज पर वैश्वीकरण का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह है कि अब सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक संबंधों की सीमायें व्यक्तिगत स्थितियों से बंधी नहीं है। यह वह शक्ति है जो सभी प्रकार की स्थानिक बाधाओं को पार करने की क्षमता रखती है।

परम्परागत समाजों में सामाजिक संबंधों, रीति–रिवाजों तथा सांस्कृतिक गतिविधियों की अभिव्यक्ति विभिन्न स्थानों पर अलग तरह से हुआ करती थी। उस समय व्यक्ति स्थापित नियमों के अनुरूप कार्य करते थे, जैसे – परिवारों, गांवों, नगरों तथा कस्बों के स्थापित रीति–रिवाजों अथवा नियमों के अनुसार। यद्यपि नेटवर्क समाज के अस्तित्व में आने के बाद नगरीय परिदृश्य में पर्याप्त रूप से परिवर्तन आ गया है। लगभग सभी नगर नेटवर्क से सीधे जुड़ गये हैं। परन्तु स्थानीय क्षेत्रों का नियंत्रण कम हुआ है। अब लोग इस बात के लिये स्वतंत्र है कि वे मासमीडिया (जनसंचार माध्यम) तथा कंप्यूटर के माध्यम से वैश्विक नेटवर्क से कहीं भी संबंध स्थापित कर सकते हैं। उन्हें अपनी पृष्ठभूमि बताने या आमने –सामने संवाद करने की आवश्यकता नहीं है। बिना सामने आये भी संबंधों का निर्माण संभव है। यद्यपि इसके कारण पारम्परिक तथा सामाजिक संबंधों पर बुरा प्रभाव पड़ा है। नेटवर्क समाज के उदय होने तथा उससे जुड़े मूल्यों के कारण पारम्परिक सामाजिक संबंध प्रभावित हुए हैं। कैस्टेल्स के अनुसार सामाजिक मीडिया की भूमिकाओं तथा नेटवर्क से जुड़ी फेसबुक आदि सुविधाओं के कारण नेटवर्क से विभिन्न प्रकार की सामाजिक गतिविधियां सीधी जुड़ गई हैं और अब सशक्तिकरण की प्रक्रिया आसान हो गई है। अब सक्रिय सामाजिक मीडिया वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण सूत्र (चैनल) बन गया है जिसके माध्यम से विविध प्रकार की संस्कृतियों, रचनात्मक तथा स्वतंत्रता के नये–नये क्षेत्रों की पहुंच वैश्विक स्तर पर पूरे मानव समाज तक हो गई है।

इस प्रकार सबसे महत्वपूर्ण भूमिका सूचना प्रौधोगिकी की है जो बिना किसी बाधा के सूचनाओं को कहीं से कहीं तक पहुँचा सकती है।

6.2.2 सूचना प्रौद्योगिकी का अर्थ

केस्टेल्स ने बताया था कि हर सभ्यता या समाज के अपना सामाजिक नेटवर्क रहा है। यद्यपि सूचना एवं प्रसारण प्रौद्योगिकी का अस्तित्व आधुनिक समाज को पहले वाले समाजों के नेटवर्क की तुलना में एक खास प्रकार का नेटवर्क है जो आधुनिक समाज को खास बना देता है। सूचना व प्रसारण प्रौद्योगिकी के कारण व्यापक क्षेत्र में नेटवर्क स्थापित किया जा सकता है। जिसके कारण पहले से अलग प्रकार के सामाजिक संबंधों का निर्माण संभव हो सका है।

पहले से मौजूद सामाजिक संरचनाओं में परिवर्तन इस बात पर निर्भर करता है कि हम संपर्क के नये तरीके किस प्रकार स्थापित कर सकते है और किस तरह समझ सकते हैं तथा किस तरह हस्तक्षेप कर सकते हैं:

- यदि एकतरफा संपर्क इस प्रकार होता है जिसमें जानकारी तथा सूचना, सूचना प्राप्त करने वाले को उसकी रूप मे पहुंच जाती है जिस रूप में उसे पहुंचाई जाती है तो इसमें कोई उत्सुकता जागृत नहीं होती और केवल बाहरी जानकारी

के आधार पर किसी समाज का सशक्तीकरण भी नहीं किया जा सकता। इससे एक तर्क विहीन निष्क्रिय समाज का विकास होता है।

- यदि सूचना उस प्रक्रिया के रूप में स्वीकार की जाती है जिसके माध्यम से सूचना का सतत निर्माण हो रहा है तो सूचनायें प्राप्त करने वाले इस सूचना को समझते भी हैं और उस यथासंभव सवाल भी उठाते हैं। और इस तरह उनका दुनिया के बारे में एक दृष्टिकोण भी विकसित होता है। ऐसी स्थिति में स्थानीय समाज में रहने वाले लोगों का सशक्तीकरण भी होता है। संस्कृतियों के आधार पर उनके अनुसार नये–नये विचारों का सृजन होता रहता है। इससे संपर्क के नये–नये रूप सामने आते रहते हैं तथा जानकारियों को लगातार आदान–प्रदान होते रहने से समाजों का सशक्तीकरण होता रहता है।

सूचना एवं प्रसारण प्रौद्योगिकी के प्रयोग से विभिन्न समुदायों के बीच पर्याप्त रूप से विकास हुआ है उनमें अनेक प्रकार के परिवर्तन आये हैं तथा उनका सशक्तीकरण हुआ है और जहां जानकारियों का लेन–देन स्वतंत्र रूप से संभव नहीं हो सका है, वहां के समाजों में निष्क्रियता आई है उन्हें विकास के बारे में जानकारियों भले ही मिल गई हों परन्तु उनका स्वयं का विकास नहीं हो पाया है। वास्तव में उन लोगों ने इसकी आलोचना की है जो वैश्वीकरण के दूसरे पहलू पर ही विचार किया करते हैं। इन आलोचकों के अनुसार इस तरह के जानकारियों और सूचनाओं के प्रवाह से समुदाय एक जैसे और मानकीकृत हो जाते हैं और प्रौद्योगिक क्षमतायें इस तरह के एक ही जैसे समाजों के निर्माण में मदद करती हैं। इन सूचनाओं के केन्द्र में जो शक्ति मौजूद होती है वह सूचनायें प्राप्त करने वालों को इस तरह प्रभावित करती है कि उनकी संस्कृतियों में भी सूचनायें देने वाली संस्कृतियों के अनुसार बदलाव आ जाते हैं। यद्यपि ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनके अनुसार इलैक्ट्रोनिक माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान सूचनाओं की दो तरफा प्रविधि होती है। जो सूचनाएं अथवा जानकारियां हमें प्राप्त होती हैं, जरूरी नहीं है कि उन्हें हम ज्यों का त्यों स्वीकार करें और उन पर कोई सवाल न उठाये। अपने विचार प्रकट करने, हस्तक्षेप करने तथा सहमत न होने पर विरोध न करने की संभावनायें खुली रहती है और नये–नये विचारों का आदान–प्रदान होता रहता है। इस प्रकार कोई भी प्रभावशाली ज्ञान अपने आप में अंतिम रूप से प्रभाव व डालने वाला साबित नहीं हो पाता वास्तव में अनेक नेटवर्क समाजों में उस समय तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब कोई समूह अपने विचारों तथा सुझावों को जबरन दूसरों पर लादने की कोशिश करता है और दूसरे समाज के लोग उसे अपने मामलों में हस्तक्षेप मानते हैं और यह महसूस करते हैं कि कुछ विचार उन पर जबरन लादे जा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी तथा इसके समाजों पर व्यापक इस्तेमाल से अनेक प्रकार के टकराव व सामने आने की संभावनायें फिर भी बनी ही रहती हैं।

बोध प्रश्न 1

1) नेटवर्क समाज का इनसे सीधा संबंध होता है–

   अ) सामाजिक नियंत्रण,

   ब) सूचना प्रौद्योगिकी

   स) अनौपचारिक समूह

2) नगरीय नेटवर्क का समाजशास्त्र मुख्य रूप से किसके सिद्धांतों पर काम करता है?

   अ) सिमेल

ब) आर. पार्क

स) कैस्टेल्स

3) सूचना प्रौद्योगिकी की द्वारा प्रेषित सूचना से निम्न में से किसका निर्माण होता है?

अ) शक्ति समूह

ब) समूहों का विघटन

स) शक्ति समूहों का निर्माण तथा विघटन दोनों।

6.3 नेटवर्क समाज

अनेक प्रकार के परिवर्तनों के एक साथ से होते रहने के कारण ऐसा लगने लगा था कि इस नये उभरने वाले समाज में एक नई अर्थव्यवस्था का निर्माण हो रहा है। नई अर्थव्यवस्था साथ–साथ समाज के अन्य पहलुओं में भी परिवर्तन देखने को मिल रहे थे। उसी स्थिति में समाजशास्त्र में नये पक्षों का उभरना तथा नये–नये परिवर्तन होना जरूरी था, जिससे समाजशास्त्र को सार्थक तथा उपयोगी बनाये रखा जा सके। एक नया प्रौद्योगिक कीर्तिमान तैयार हो रहा था। यह जैनेटिक (आनुवांशिक) इंजीनियरिंग सहित नई सूचना प्रौद्योगिकियों से उत्पन्न हो रहा था। क्लोडे फिशर (1992) ने प्रौद्योगिकी को भौतिक संस्कृति का अंग माना है। यह एक समाज आधारित प्रक्रिया थी; यह कोई बाहर से थोपी गई चीज नहीं थी। यह समाज को सीधे–सीधे प्रभावित कर रही थी।

समाज के भौतिक परिवर्तन पर सभी सामाजिक संरचनाओं तथा प्रक्रियाएं निर्भर करती हैं, इसीलिए इसका निरंतर होते रहना जरूरी है। इलैक्ट्रोनिक आधारित सूचना नेटवर्क के साथ–साथ सामाजिक अंतसम्पर्क की प्रक्रिया पूरी तरह प्रभावित होती है।

बहुत पहले औद्योगिक क्रांति हुई थी, जिसे औद्योगिक समाज के अभ्युदय तथा अन्य संबंधित परिवर्तनों से अलग करके नहीं देखा जा सकता, इसी तरह यह नई सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति है जो सामाजिक ताने–बाने के अंतर्गत बहु–आयामी सामाजिक परिवर्तनों का कारण बन कर उभरी है। सूचना–प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन का सीधे–सीधे कारण कारक नहीं है, यह निश्चित रूप से ऐसी प्रक्रियाओं को जन्म देने के लिए जिम्मेदार है जो जिसके जिनके परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति के क्षेत्र में उत्पादन के नये–नये रूप सामने आए, प्रबंधन, सम्पर्क तथा वैश्वीकरण की नई शैलियां विकसित हुईं। नये समाज के अभ्युदय को नेटवर्क के विकसित होने के साथ–साथ जोड़कर देखा जा सकता है।

वित्तीय लेन–देन की प्रक्रिया में इलैक्ट्रोनिक नेटवर्क पूरे वैश्विक वित्तीय बाजार के लिए सुदृढ़ स्तम्भ बन गया। कंप्यूटर नेटवर्क से प्राप्त इंटरनेट विश्वसनीय व अधिकृत जानकारियों का मूल मंत्र बन जाता है। इलैक्ट्रोनिक हाईपरटैक्स्ट की पूरी प्रक्रिया, वैश्विक सम्पर्क, स्टूडियोज़ के नेटवर्क सम्पर्क, समाचार कक्ष, सूचना प्रणालियां, मोबाइल सम्पर्क इकाइयां आदि जब लगातार सक्रिय होते तो लगता है कि एक विशेष प्रकार का समाज अस्तित्व में है। यही कारण है कि अब वैश्विक बाजार किसी की पहुँच से दूर नहीं है। बल्कि अब यह विभिन्न बाजारों के तरह–तरह के वित्तीय लेन–देन का केंद्र बन चुका है जिसमें विभिन्न व्यवसायों जुड़े श्रमों का लेखा–जोखा भी शामिल होता है। लगातार होते रहने वाले सूचना–विनिमय व्यावसायिक संगठनों के लिए बहुत उपयोगी हैं। इस तरह से ये संगठन नैटवर्क उद्यम बन जाते हैं। इन उद्यमों के कार्य संस्थागत निर्धारण प्रणालियों पर निर्भर करते हैं जो स्वचालित रूप से

सूचनाओं के नेटवर्क तथा संचार व्यवस्था से जुड़े होते है। इंटरनेट के माध्यम से केवल नगरीय स्तर पर ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जुड़ा जा सकता है।

6.3.1 वैश्वीकरण तथा नेटवर्क

सूचना प्रौद्योगिकी के साथ वैश्वीकरण सामाजिक परिवर्तन का दूसरा आयाम बन जाता है। इसके अंतर्गत प्रौद्योगिक, संगठनात्मक तथा संस्थागत संदर्भ समाहित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रकृति नई है, क्योंकि इस दौर से पहले वाले दौरा का अंतर्राष्ट्रीयकरण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का लाभ नहीं उठा सकता था, जैसा कि डेविड हैल्ड एट आल्टर (1999) ने भी कहा है। इलैक्ट्रानिक हाईपरटैकस्ट जो सभी स्रोतों से प्राप्त सांकेतिक प्रसंस्करणों तथा संदेशों का मिला जुलाकर सांस्कृतिक ढांचा है अभिव्यक्ति पर के साथ मिलकर तीसरा आयाम बन जाता हैं।

इंटरनैट एक ऐसा माध्यम है जो लोगों को परस्पर जोड़ता है तथा साझे मल्टीमीडिया हाइपरटेक्स्ट को गति प्रदान करता है और बहुत तेजी से वैश्वीकरण से जुड़ा है। इस हाइपरटैक्स्ट के माध्यम से नई संस्कृति से जुड़ी जानकारियों प्राप्त होती हैं, क्योंकि यह आभासी वास्तविकता के मामले में संस्कृति आधारित है। इसका आभासीपन सांकेतिक पर्यावरण की धुरी बन जाता है तथा लोगों के सम्पर्क में आते हुए उनके विचारों तथा अनुभवों का हिस्सा बन जाता है।

इस नये वैश्विक नेटवर्क की अंतिम प्रमुख विशेषता यह है कि यह संप्रभुता प्राप्त राष्ट्र–राज्य की सीमाओं को लांघ जाता है। यह राष्ट्र–राज्य के संस्थागत अस्तित्व का सवाल नहीं है, परंतु शक्ति–उपकरणों के परिवर्तन के साथ–साथ परिवर्तन तो होने ही हैं। राष्ट्रीय सरकारों में पुनर्गठन की प्रक्रियाएं चलती रहती है, अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क, संगठन आदि सब बदलते रहते हैं। इस प्रकार पूर राजनैतिक प्रतिनिधित्व का प्रस्तुतिकरण तथा संशोधन होता रहता है।

इसके अतिरिक्त सबसे गंभीर संकट पितृ–सत्तात्मकता के अस्तित्व और महिला असंतोष का है। गे (समलैंगिक पुरूष) तथा लेस्बियन (समलैंगिक स्त्री) आंदोलन विषम लैंगिक यौन संबंधों के प्रति सामान्य जनों के दृष्टिकोण तथा मान्यताओं को चुनौती देते रहे हैं। आगे ऐसी संभावनाएं है कि कुछ अलग प्रकार के परिवार अस्तित्व में आयेंगे जो समतावादी मूल्यों को अधिक प्राथमिकता देंगे। जगह का गति तथा मानवीय कीमत का संकट है जिसे पितृसत्तात्मकता आगे बढ़ायेगी और उसे चलन में शामिल करेगी। बहुसंरीयता, सामाजीकरण और निजी नेटवर्क व्यवस्था के चलते यह बदलाव आना तय है। ये जीवन शैलियों के परिवर्तन हैं जो अपने साथ–साथ सामज के अन्य क्षेत्रों में भी परिवर्तन लाते हैं।

विज्ञान तथा वैज्ञानिक ज्ञान के क्षेत्र में होने वाला विकास भी उल्लेखनीय है। यह ज्ञान विज्ञान के स्वस्थ विकास के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि पारिस्थितिक प्रभाव, जो लगातार देखने को मिल रहा है, इस बात पर ध्यान देना जरूरी है, जैसा कि केस्टेल्स ने कहा है – ''अत्यधिक असाधारण सांस्कृतिक परिवर्तनों का दौर शुरू हो चुका है, जो हमारे विचारों को विपरीत दिशा में मोड़ रहा है। जो विचार 'ज्ञानादेय' के दौर में अग्रणी विचारकों में मौजूद थे (2000: 694), उनमें अब बदलाव आना तय है। इस प्रकार हमारे सामने पुराने समाजों का समापन हो रहा है और नये समाजों का उदय हो रहा है। यह नया समाज तीन अनिवार्य घटकों के मिलन से संभव हुआ है जो साथ ही साथ अस्तित्व में आये हैं। इनमें से एक है सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति, पूंजीवाद की पुनर्संरचना तथा 1960 के दशक में अमेरिका तथा

पश्चिमी यूरोप में अस्तित्व में आए सामाजिक आंदोलन। विविधता के बीच अस्तित्व में आई नेटवर्क आधारित नये सामाजिक संरचना नये नेटवर्क समाज की ओर ले जा रही है।

6.3.2 समाजशास्त्र और नगरीय नेटवर्क

जब से नेटवर्क लोगों को जोड़ने के सशक्त माध्यम के रूप में सामने आया है, तब से सामाजिक संरचनाएं पुनर्परिभाषित हो रही हैं। इन सामाजिक संरचनाओं में मनुष्यों के संबंध उत्पादन/खपत अथवा किसी शक्ति–गतिशीलता या अनुभवों से जुड़ते जा रहे हैं जो सांस्कृतिक ताने–बाने के अंतर्गत सार्थक साबित हो रहे हैं। नये सामाजिक ढांचे के अंतर्गत यह सत्य उभर कर सामने आ रहा है कि समाजशास्त्र संकल्पनात्मक तथा पद्धतिगत समस्याओं की आवाज बनने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

समाजशास्त्र नेटवर्क के अध्ययन में शामिल है, वैलमेन (1999), फिशर (1992), ग्रेनोवेटर (1985) आदि विद्वानों के शोधकार्य इस मामले में मानक हैं। संचार प्रौद्योगिकियों के विस्तार के साथ ही स्थानीय बाधाएं दूर होती जा रही है। संचार प्रौद्योगिकियां सामाजिक अंतर्संबंधों का माध्यम बनती जा रही हैं। यद्यपि दूरियों का अंत होने से ही यह नहीं समझ लिया जाना चाहिए कि समाज के स्थानिक आयाम के अंत का यही एक मात्र रास्ता है। सार्थक भौतिक क्षेत्र अधिकार लोगों के लिए अनुभवों का प्रमुख स्रोत है। पारस्परिक सम्पर्कों के बीच अंतरालों के रहते भौतिक स्थान को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता। यह केवल स्थान के नये रूप या प्रकार को अस्तित्व में लाने में सहयोगी हो सकता है। यह स्थान इलैक्ट्रोनिक नेटवर्क तथा सूचना प्रवाह द्वारा निर्मित हो सकता है। इसके अतिरिक्त यह क्षेत्रों द्वारा निर्मित भी हो सकता है, क्योंकि भौतिक स्थान को भी काम करने के लिए नेटवर्क सम्पर्क की आवश्यकता पड़ती है।

स्थान का यह प्रवाह स्थानों के अनेक छोटे–छोटे टुकड़ों से बना होता है जो दूर संचार के माध्यम से जुड़े होते हैं, परिवर्तन जैसी सुविधाओं तथा सूचना प्रौद्योगिकियों से जुड़े होते हैं। वैश्विक नगर के बारे में हाल ही में बहुत बातें हुई हैं। यह उल्लेखनीय है कि यह वैश्विक नगर महानगरों की तरह एक विस्तृत नगरीय क्षेत्र नहीं है जिसका भौगोलिक परिदृश्य दुनिया भर में ऊँचे स्तर का माना जाता है। ऐसे नगर पहले भी होते थे और इन्हें वैश्विक नगर या विश्व–नगर कहा जाता था। इस प्रकार वैश्विक नगर वास्तव में कोई बड़े क्षेत्र में फैला हुआ शहर नहीं है। वैश्विक नगर की विशेषताएं छोटे, बड़े तथा बहुत बड़े आदि अनेक प्रकार के भौतिक प्रसार वाले नगरों में हो सकती हैं। वैश्विक नगरों का निर्माण वैश्विक अर्थ व्यवस्थाओं से होता है जो विभिन्न नगरों में मौजूद होती हैं और एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। वैश्विक संपर्क का प्रबंधन इन्हीं से होता है। उदाहरण के लिए मानहट्टन नगर के कुछ हिस्सों को वैश्विक नगर कहा जा सकता है, क्योंकि नगर के इन भागों में वैश्विक प्रबंधन का नेटवर्क मौजूद है। संक्षेप में वैश्विक नगर ऐसे गैर स्थानिक क्षेत्रों के लिए नेटवर्क का काम करते हैं जो किसी भी क्षेत्रीय सीमा से परे केवल नेटवर्क द्वारा जुड़े होते हैं। अंतक्षेत्रीय नेटवर्कों तथा उनके निकटवर्ती स्थानीय क्षेत्रों से संपर्कों व संबंधों को समझने का यह एक तरीका है। इस प्रकार स्थानीय तथा वैश्विक संबंधों का विकास होता है। हम यह देख सकते हैं कि असतत नेटवर्क का स्थानीय क्षेत्रों से संबंध नई संरचनाओं के आधारों का निर्माण करता है।

बोध प्रश्न 2

निम्न कथनों में से कौन सा सत्य है, और कौन सा असत्य?

1) नेटवर्क एक नया परिदृश्य है जो केवल समकालीन समाज में उभर कर आया है सत्य ( ) / असत्य ( )

2) सूचना प्रौद्योगिकी का हमारे दैनिक जीवन पर कोई प्रभाव नहीं है ..... सत्य ( ) / असत्य ( )

3) नेटवर्क का उदय होना सामूहिक रूप से तथा व्यक्तिगत रूप से किसी के लिए कोई बाधा नहीं बनता।

6.4 सारांश

सामाजिक संगठनों में बहुत पहले से ही नेटवर्क का चलन रहा है। किसी अन्य परिदृश्य की तरह नेटवर्क के भी बहुत उपयोग हैं, पर साथ ही साथ अनेक कमजोरियां भी हैं। अब दुनिया पहले की तुलना में अधिक अस्थिर होती जा रही है। अतः लचीलेपन और स्वीकृति के गुण निश्चित रूप से नेटवर्क के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के मामले में बहुत उपयोगी साबित हुए हैं।

फिर भी यदि आलोचना की दृष्टि से देखा जाय तो प्रबंधन में नेटवर्क के इस्तेमाल में कुछ समस्याएं रहती हैं। पारस्परिक संबंधों के मामले में निजी तौर पर नेटवर्क बहुत उपयोगी है। लेकिन कभी–कभी संसाधन जुटाने तथा किसी विशेष कार्य को पूरा करने में नेटवर्क की क्षमताएं कम पड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए युद्ध के समय बड़ी केंद्रित सेवाएं नेटवर्क से बेहतर काम करती हैं। यद्यपि ज्यों ज्यों नेटवर्क के रूप में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों का विकास होता जा रहा है, त्यों त्यों ये कमियां भी दूर होती जा रही हैं। संचार के क्षेत्र में इलैक्ट्रानिक प्रणाली के विकसित हो जाने से कामों के विकेंद्रीयकरण तथा क्रियान्वयन में बहुत मदद मिली है। लचीलेपन के गुण के कारण काम करने में सुविधा रहती है। अधिकेंद्रित पदानुक्रमित संगठनों के कमजोर होते जाने तथा समाप्त होने के कारण नेट का इस्तेमाल और मजबूती किया जा पा रहा है।

सूचना युग में सामाजिक विकास की व्याख्या सक्रिय नेटवर्क द्वारा की जा सकती है जिसमें सभी बहुआयामी सामाजिक संरचनाएं होती हैं। एक नगर की समस्त विविधताओं को नेटवर्क के माध्यम से संगठित किया जा सकता है और नेटवर्क को विविधाताओं वाले जटिल महानगरों की ताकत बनाया जा सकता है।

मिशेल के अनुसार 'किसी विशेष संघ या संगठन से जुड़े व्यक्तियों को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। इस व्यवस्था का एक अतिरिक्त लाभ यह है कि इसके माध्यम को जुड़ने वाले सभी व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार का पता लगाया जा सकता हैं' (1969: 2)'। नेटवर्क के अनुसार स्थानिक संरचनाओं की व्याख्या करने तथा अन्य अनेक प्रकार कैसे हस्तक्षेप करने से नगरीय समाजशास्त्र में अध्ययन का एक नया क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है।

6.5 संदर्भ

Berges E.E. (1962)*Urban Sociology*, New York: Free Press.

Castells, M (2000). Toward a Sociology of the Network Society, *Contemporary Sociology*, Vol. 29, No. 5, pp. 693-699.

Granovetter, M (1985). Economic Action and Social Structure: The Problem of Embeddedness, *The American Journal of Sociology*, Vol. 91, No. 3, pp. 481-510

Shrivastava, A.K. (1989). *Urbanization: Concept & Growth*, New Delhi: H.K.Publishers.

6.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) (ब)
2) (स)
3) (स)

बोध प्रश्न 2

1) असत्य
2) असत्य
3) सत्य

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY